NEERAJ®

रेडियो लेखन

(Writing for Radio)

B.R.P.A.-101

Chapter Wise Reference Book Including Solved Sample Papers

By: *Sanjay Jain*

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:
1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 240/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajbooks.com**
Website: **www.neerajbooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Papers Only	*Typesetting by: Competent Computers*	*Printed at: Novelty Printer*

Notes:

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and up-to-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

Get Books by Post (Pay Cash on Delivery)

If you want to Buy NEERAJ BOOKS for IGNOU Courses then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com . where you can select your Required NEERAJ IGNOU BOOKS after seeing the Details of the Course, Name of the Book, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ IGNOU BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the Various "Special Discount Schemes" being offered by our Company at our Official website www.neerajbooks.com.

We also have "Cash of Delivery" facility where there is No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through "Cash on Delivery" service (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 3-4 days after we receive your order and it takes Nearly 4-5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 8-9 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006

Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail: **info@neerajbooks.com** *Website:* **www.neerajbooks.com**

CONTENTS

रेडियो लेखन
(WRITING FOR RADIO)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved)	1-5
Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1-5
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1-5
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1-5
Question Paper—December, 2012 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2011 (Solved)	1-4

Chapterwise Reference Book

1. रेडियो : एक परिचय **(Radio : An Introduction)**	1
2. रेडियो का इतिहास **(History of Radio)**	11
3. रेडियो की शक्ति **(Power of Radio)**	21
4. रेडियो के नए क्षितिज **(New Dimensions of Radio)**	26
5. रेडियो की भाषा (संकेत और कोड) **(Radio Language (Sign and Code))**	31
6. रेडियो की विधाएँ **(Format of Radio)**	39

S.No.	Chapter	Page
7.	रेडियो के कार्य (Functions of Radio)	48
8.	समाचार लेखन (News Writing)	53
9.	उद्घोषणा, कम्पीयरिंग, वार्ता, भेंटवार्ता, परिचर्चा और वार्तालाप (Announcement, Comering, Talk, Interview and Conversation)	62
10.	रूपक डॉक्यूमेंट्री, पत्रिका और रिपोर्ट (Feature Documentary, Magazine and Report)	71
11.	जन-सेवा प्रसारण, व्यावसायिक प्रसारण और विज्ञापन (Public Sevice Brodcasting, Commercial Broadcasting and Advertisement)	81
12.	रेडियो नाटक और नाट्य रूपांतरण (Radio Drama and)	90
13.	रेडियो धारावाहिक (Radio Serial)	95
14.	मनोरंजन संबंधी कार्यक्रम (Entertaining Programme)	99
15.	आँखों देखा हाल (कमेंट्री) (Commentry)	109
16.	शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका (Role of Radio in Education)	115
17.	औपचारिक शिक्षा के लिए रेडियो लेखन (Radio Writing for Informal Education)	123
18.	अनौपचारिक शिक्षा के लिए रेडियो लेखन (Radio Writting for Informal Education)	128
19.	दूर शिक्षा के लिए लेखन (Writing for Distance Education)	134

■ ■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

Exam Held in

February – 2021

(Solved)

रेडियो लेखन
(Writing for Radio)

B.R.P.A.-101

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दें। प्रत्येक खंड से* ***दो*** *प्रश्न आवश्यक हैं। सभी के अंक समान हैं।*

खण्ड–क

प्रश्न 1. जन-संचार माध्यमों में रेडियो की भूमिका और महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-21, 'रेडियो की शक्ति'

प्रश्न 2. रेडियो समाचार लेखन की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-55, 'रेडियो के लिए समाचार लेखन'

प्रश्न 3. रेडियो के शैक्षिक प्रसारणों के महत्व को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–हर घर और हर नागरिक तक शिक्षा पहुंचाना देश के लिए वर्तमान की एक बड़ी चुनौती है। आज दुनिया एक ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के युग में प्रवेश कर चुकी है। भारत में आज भी 30% से ज्यादा निरक्षर हैं। आबादी का एक बड़ा हिस्सा उच्च और माध्यमिक शिक्षा से वंचित है तथा महिलाओं और समाज के कमजोर वर्गों के एक बड़े हिस्से की पहुंच औपचारिक शिक्षा तक नहीं हो पा रही है। इसमें अनेक सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारण निहित हैं। अत: शिक्षा की रोशनी को हर घर और नागरिक तक पहुँचाने के लिए उपाय और माध्यम तलाशने जरूरी हैं। रेडियो एक सशक्त और प्रभावशाली माध्यम है, जिसके जरिए औपचारिक शिक्षा के दायरे से बाहर लोगों तक पहुँचने के साथ उन छात्रों को भी बेहतर शिक्षा दी जा सकती है, जो औपचारिक शिक्षा के तहत अध्ययन कर रहे हैं। रेडियो शिक्षा का एक सस्ता, सर्वसुलभ, स्थानीय जरूरतों के अनुकूल और सृजनात्मक माध्यम है इसीलिए दुनिया भर में शिक्षा के एक माध्यम के रूप में रेडियो का काफी प्रयोग हो रहा है। भारत में भी रेडियो के जरिए शैक्षिक प्रसारणों का अनुभव अत्यंत उत्साहवर्धक रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका लगातार बढ़ रही है। देश में कई विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों द्वारा शैक्षिक प्रसारण के लिए रेडियो केन्द्रों की स्थापना बढ़ना इसका प्रमाण है। केन्द्र सरकार ने शैक्षणिक संस्थानों को सामुदायिक रेडियो शुरू करने के लिए उदारतापूर्वक लाइसेंस देना भी शुरू कर दिया है। एफ.एम. टेक्नालॉजी ने श्रोताओं में रेडियो की लोकप्रियता बढ़ाई है और शिक्षण संस्थान शिक्षा के प्रसार में इस टेक्नालॉजी का इस्तेमाल करने को उत्सुक भी दिख रहे हैं।

औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा–औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका उल्लेखनीय हो सकती है, लेकिन औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के अंतर को समझना भी जरूरी है।

औपचारिक शिक्षा निश्चित सांस्थानिक ढांचे, पाठ्यक्रम, परीक्षा प्रणाली और समय सीमा में बंधी होती है। इसमें प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक की शिक्षा में छात्र केवल अध्ययन करता है। एक निश्चित समय सीमा के अंदर पाठ्यक्रम पूरा करना और उसकी परीक्षा उत्तीर्ण कर डिग्री और प्रमाण-पत्र प्राप्त करना विद्यार्थी के लिए अनिवार्य होता है। औपचारिक शिक्षा में पाठ्यक्रम और आमने-सामने के शिक्षण पर ही बल होता है। छात्र कक्षा के अलावा पाठ्यपुस्तकों और अन्य सहायक पुस्तकों पर निर्भर होते हैं।

ऐसी स्थिति में औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो एक सहायक की भूमिका निभा सकता है। रेडियो को कक्षा और पाठ्यक्रम आधारित शिक्षण पर बल देने के अलावा मददगार की भूमिका निभानी चाहिए। रेडियो के जरिए किसी पाठ पर श्रोता छात्रों और शिक्षक के बीच चर्चा या फिर सवाल-जवाब से श्रोता छात्रों को काफी लाभ हो सकता है। पाठ्यक्रम से संबंधित किसी विषय पर विशेषज्ञों के बीच परिचर्चा या फिर विषय से जुड़े किसी विशेष पहलू की चर्चा विद्यार्थियों के लिए लाभकारी हो सकती है। कई बार पाठ्यक्रम से इतर किसी विषय पर चर्चा से छात्रों को अपनी समझ के दायरे को बढ़ाने में मदद मिल सकती है। इतिहास के किसी पाठ पर आधारित रेडियो ड्रामा या भूगोल के किसी पाठ पर रेडियो रूपक (फीचर) द्वारा विद्यार्थी को मनोरंजक तरीके से जानकारी दी जा सकती है।

अनौपचारिक शिक्षा औपचारिक शिक्षा के दायरे से बाहर होती है। इसमें काफी लचीलापन होता है। इसमें किसी भी

www.neerajbooks.com

कारण से औपचारिक शिक्षा हासिल नहीं कर पाते या उन्हें औपचारिक शिक्षा बीच में छोड़ने वालों को शिक्षा दी जाती है। अनौपचारिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य इसके लाभार्थियों को जागरूक बनाना और उपयोगी जानकारियाँ प्रदान करना है। अनौपचारिक शिक्षा का दायरा बहुत बड़ा है, लेकिन उसके लाभार्थियों की जरूरतों, मानसिक अवस्था और ज्ञान का स्तर भिन्न हो सकता है।

अनौपचारिक शिक्षा में कई बार शिक्षक और आमने-सामने का शिक्षण भी होता है, लेकिन वह पर्याप्त नहीं होता या अनियमित होता है या बहुत संक्षिप्त समय के लिए होता है। ऐसी स्थिति में रेडियो उनके शिक्षण का प्रमुख माध्यम बन सकता है। रेडियो पर अनौपचारिक शिक्षा से संबंधित कार्यक्रम तैयार करते हुए सावधान और सचेत रहने के साथ पर्याप्त तैयारी भी जरूरी है। कार्यक्रमों का स्तर लक्षित लाभार्थियों को ध्यान में रखकर तय किया जाना चाहिए। अनौपचारिक शिक्षा के रेडियो कार्यक्रमों अनौपचारिक होने के साथ मनोरंजक, हल्का-फुल्का, सरल और दिलचस्प भी होना चाहिए।

दूर शिक्षा–दूर शिक्षा प्रणाली में औपचारिक शिक्षा प्रणाली का बहुत प्रभाव है लेकिन औपचारिक शिक्षा प्रणाली की तुलना में यह काफी लचीला है। इसमें छात्र घर बैठे और कोई काम करने के साथ शिक्षा भी प्राप्त कर पाता है। दूर शिक्षा का भी पाठ्यक्रम होता है, उसकी भी परीक्षा होती है और संक्षिप्त समय के लिए संपर्क कक्षाएं भी होती हैं, लेकिन शिक्षण सामग्री मुद्रित रूप में छात्र के पास भेजी जाती है और शिक्षण के लिए रेडियो और टी.वी. जैसे माध्यमों का सहारा लिया जाता है।

दूर शिक्षा में रेडियो का बहुत अधिक महत्त्व है। दूर शिक्षा के छात्र का रेडियो के जरिए अपने शिक्षण संस्थान से जुड़ाव रहता है। उसे रेडियो द्वारा विषय के शिक्षकों के व्याख्यान, चर्चाएं और सवाल-जवाब सुन पाता है। उसे शिक्षक की कमी महसूस नहीं होती है। दूर शिक्षा में रेडियो की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। अत: शैक्षिक कार्यक्रमों का निर्माण पाठयक्रम को केंद्र में रखते हुए किया जाए और उसे अधिक से अधिक अन्तर्क्रियात्मक बनाया जाए। दूर शिक्षा से संबंधित रेडियो प्रसारण में छात्रों की सुविधा के लिए उसका कई बार पुनर्प्रसारण बहुत जरूरी होता है।

प्रश्न 4. रेडियो नाटक की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-90, 'मंचीय नाटक और रेडियो नाटक', 'रेडियो नाटक के तत्व'

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए–

(क) रेडियो विज्ञापन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-86, 'विज्ञापन'

(ख) रेडियो धारावाहिक

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-95, 'रेडियो धारावाहिक का अर्थ', 'रेडियो धारावाहिक के आवश्यक तत्व'

(ग) युवाओं के लिए प्रसारण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-84, 'विशेष श्रोता समूह कार्यक्रम'

(घ) रेडियो क्विज

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-104, 'क्विज या प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम'

खण्ड–ख

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर रेडियोवार्ता लिखिए–

(क) भ्रष्टाचार का दलदल

उत्तर–*सड़क के वाहनों की आवाज का शोर*

दो पुरुषों की बातचीत का स्वर! स्वर जो सड़क पर जा रहे हैं। उनकी आवाज में निराशा है।

–सौरभ, लगता है, यहाँ भी नौकरी नहीं मिलेगी।

–सही कह रहे हो वर्मा। हर तरफ भ्रष्टाचार जो है। याद करो जब हम आज नौकरी के लिए ऑफिस में घुसे थे। *(ऑफिस में लोगों की बातचीत। बॉस निचले अधिकारियों से कहते हुए)*

किसी भी आदमी को नौकरी पर नियमों के बिना नहीं रखना। कोई कितना भी गिड़गिड़ाये हम अपने नियम नहीं तोड़ते।

(जोर से सम्मिलित हँसी का शोर)

बॉस *(हँसते हुए)*–नियम तो नियम है–चाहे रिश्वत का ही क्यों न हो। भई हमारी रोजी-रोटी भी तो इसी से चलती है।

(पुन: सम्मिलित, किंतु व्यंग्यात्मक हँसी)

(भ्रष्टाचार पर बनी कोई फिल्मी धुन भी नेपथ्य में बज रही है)

(कहानी फिर से दोनों दोस्तों पर केंद्रित)

सुनी थी वर्मा, तुमने उन लोगों की बातचीत? उनकी हँसी कितनी क्रूर थी। वे इंसान नहीं, सब भ्रष्टाचार के दलदल में फंसे राक्षस दिख रहे थे। नेता, अधिकारी हर आदमी भ्रष्टाचारी होता जा रहा है। क्या होगा हम जैसे जरूरतमंदों का *(नेपथ्य में दु:ख-भरी ध्वनि वाली संगीत की धुन)....*

(ख) खाद्य सुरक्षा का प्रश्न

उत्तर–(स्टूडियो में कुछ विशेषज्ञ तथा खाद्य सुरक्षा मंत्री विराजमान हैं, जो खाद्य सुरक्षा की नीति पर चर्चा कर रहे हैं। सूत्रधार सबका परिचय कराता है।)

(कुछ बातचीत के बाद थोड़ा मौन)

पहला–आज हमारे देश में खेती में वैज्ञानिक तकनीकों के प्रयोग से खाद्यान्न का उत्पादन तेजी से बढ़ा है और किसानों के लिए बंपर उपज को मंडी तक पहुँचाने में खासी मशक्कत करनी पड़ती है, ताकि उसे उसकी उपज का सही दाम मिल सके और खाद्यान्न का बड़े स्तर पर भंडारण की समस्या से भी वह शीघ्र मुक्त हो सके, लेकिन मंडी में खाद्यान्न को पहुंचाने के बाद वहां

www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

रेडियो लेखन
(Writing for Radio)

रेडियो : एक परिचय

1

(Radio : An Introduction)

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

परिचय

रेडियो जनसंचार का एक सशक्त माध्यम है। जनसंचार के अन्य माध्यम भी हैं, जिनमें दृश्य-श्रव्य माध्यम यानी टी.वी. ने अपनी पकड़ मजबूत बना ली है, परंतु रेडियो का अपना अलग महत्त्व है। उन्नीसवीं सदी के अंत में यूरोप में रेडियो का आविष्कार किया। भारत में रेडियो प्रसारण 1920 से शुरू हुआ। यह 1956 में ऑल इंडिया रेडियो और 1957 से आकाशवाणी के नाम से जाना गया। 2004 तक भारत में 215 आकाशवाणी केंद्र स्थापित हो चुके थे। रेडियो ने हरित क्रांति, श्वेत क्रांति एवं नीली क्रांति मे उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। दूरदराज के क्षेत्रों और गरीब वर्गो तक रेडियो की पहुँच होने के कारण यह एक लोकप्रिय माध्यम है। सूचना प्रौद्योगिकी ने रेडियो लेखन के क्षेत्र में नई संभावनाएँ जगाई हैं। रेडियो लेखन प्रारंभ करने से पूर्व रेडियो प्रसारण की कार्यप्रणाली को जानना जरूरी है। प्रस्तुत अध्याय में रेडियो प्रसारण के प्रारंभ, विकास वर्तमान स्थिति तथा रेडियो लेखन को समझने के संदर्भ में रेडियो प्रसारण की कार्यप्रणाली एवं प्रशासनिक संगठनात्मक संरचना संबंधी जानकारी दी जा रही है।

अध्याय का विहंगावलोकन

रेडियो : दूरसंचार का एक माध्यम

सामान्य रूप में रेडियो शब्द रेडियो सेट का संक्षिप्त रूप है।

दूरसंचार क्या है? संचार का अर्थ है एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचना या पहुँचाना। व्यक्ति या वस्तु का पहुँचना/पहुँचाना, सूर्य की किरणों का धरती पर आना, संदेश भेजना आदि संचार के उदाहरण हैं। जब संचार करने वाले बिंदुओं या प्रेषकों में अधिक दूरी हो, तो उसे दूरसंचार कहते हैं। दूरसंचार के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता होती है। अपना संदेश दूसरों तक पहुँचाने के लिए यह साधन टेलीफोन हो सकता है, मोबाइल फोन, इन्टरनेट हो सकता है या फिर आपका रेडियो सेट हो सकता है, लेकिन रेडियो द्वारा संदेश भेजने के लिए किसी प्रसारण स्टूडियो का सहारा लेना पड़ेगा।

रेडियो : वैज्ञानिक अर्थ रेडियो वास्तव में क्या कार्य करता है यह समझने के लिए हमें रेडियो प्रसारण के सिद्धांत को समझना होगा। हमारी आवाज कुछ दूरी तक ही सुनाई देती है किंतु जब आवाज को तरंगों द्वारा हवा में छोड़ा जाता है तथा उसे निर्धारित बिंदु पर प्राप्त कर लिया जाता है, तो यह रेडियो प्रसारण कहलाता है। इन तरंगों को कैरियर वेव कहते हैं।

हमारे देश में आमतौर पर लोग रेडियो और ऑल इंडिया रेडियो या आकाशवाणी को एकसमान समझते हैं। लेकिन हर रेडियो प्रसारण का अपना एक विशिष्ट ट्रेड नेम (Trade Name) या पहचान होती है; जैसे Voice of America (अमेरिका में रेडियो प्रसारण), BBC (ब्रिटेन में रेडियो प्रसारण), Radio Nepal (रेडियो नेपाल) आदि ये सभी नाम विशेष प्रसारण के

संस्थाओं के साथ जुड़े हैं। किंतु लोग असकर रेडियो प्रसारण को दूसरे के साथ जोड़ देते हैं। आकाशवाणी और ऑल इंडिया रेडियो भारत में शासकीय नियंत्रण या अब प्रसार भारती के नियंत्रण के अधीन रेडियो प्रसारण संस्थाओं का नाम है। रेडियो मिर्ची, रेड एफ.एम. आदि निजी क्षेत्र के रेडियो प्रसारण चैनल हैं, जिनके श्रोता लाखों लोग हैं।

वैज्ञानिक शब्दावली में रेडियो प्रसारण हेतु वैद्युत चुम्बकीय तरंगों में से 10 किलोहर्ट्ज से ज्यादा तथा 100,000 मेगाहर्ट्ज से कम आवृत्ति वाली तरंगों का प्रयोग होता है।

रेडियो तथा जनसंचार के अन्य माध्यम

जनसंचार किसी जानकारी का बहुत से लोगों तक एक साथ पहुँचना है। आज जनसंचार के लिखित माध्यम, श्रव्य माध्यम, दृश्य माध्यम तथा नवीनतम इलेक्ट्रॉनिक माध्यम उपलब्ध हैं।

लिखित अथवा मुद्रित माध्यम समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें तथा अन्य मुद्रित सामग्री जनसंचार के मुद्रित माध्यम कहलाते हैं।

सन् 105 में चीन में कागज का आविष्कार हुआ और कागज निर्माण कला सातवीं सदी में जापान ने विकसित हुई तथा जापान में ही मुद्रण कला की शुरुआत सन 770 में हुई।

आधुनिक चल मुद्रण तकनीक का आविष्कार सन 1450 में जर्मन के जॉन गुटेनबर्ग ने किया। 1798 में अलोइस फेल्डर ने लिथोग्राफी का आविष्कार किया। 1895 में फोटो कम्पोजीशन का पेटेंट हुआ, किंतु आधुनिक कंप्यूटर नियंत्रित फोटो कम्पोजीशन का प्रचलन 1950 में हुआ। वर्तमान में मुद्रण में लेजर तकनीक अधिक लोकप्रिय है।

भारत में 1780 ई. में श्रीरामपुर में पहला छापाखाना खुला था। वर्तमान में भारत पुस्तक प्रकाशन के मामले में विश्व के बड़े देशों में गिना जाता है। 1822 में बंबई से प्रकाशित गुजराती दैनिक 'बंबई समाचार' देश का सर्वाधिक पुराना समाचार पत्र है। प्रमुख समाचार-पत्रों में 'आनंद बाजार पत्रिका', 'युगांतर' तथा 'मलयालम मनोरमा' शामिल रहे हैं। 2003 तक के आँकड़े बताते हैं कि भारत में कुल 5966 दैनिक समाचार-पत्र छपते हैं। सप्ताह में दो या तीन बार छपने वाले अखबारों की संख्या 358, साप्ताहिक पत्र 19631, पाक्षिक 7356, मासिक 16109 आदि मिलाकर पत्र-पत्रिकाओं की संख्या 55780 है। इनमें वार्षिक और अर्ध-वार्षिक तथा अनियमित अवधि की पत्र-पत्रिकाएँ भी सम्मिलित हैं। वर्तमान में दी हिंदुस्तान टाइम्स (अंग्रेजी-दिल्ली), दैनिक भास्कर (दैनिक हिन्दी) आदि का प्रकाशन बड़े पैमाने पर होता है। पत्रिकाओं में 'सरस सलिल' (पाक्षिक-हिंदी) काफी प्रसिद्ध है। किसी भी भारतीय भाषा में छपने वाले पत्र-पत्रिकाओं में सर्वाधिक संख्या हिंदी (22067) की है, अंग्रेजी का दूसरा (8141) स्थान है। उत्तर प्रदेश देश की सर्वाधिक पत्र-पत्रिकाएँ छापने वाला राज्य है, जहाँ 9000 से ज्यादा पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं। उड़ीसा ही एक ऐसा राज्य है जहाँ सभी 18 प्रमुख भारतीय भाषाओं में समाचार-पत्र छपते हैं।

सिनेमा फ्रांस में सिनेमा का पहला व्यावसायिक प्रदर्शन ल्यूमिऐरे बंधुओं द्वारा 28 दिसंबर 1895 को किया गया। सिनेमा की तकनीक को विकसित करने का श्रेय अमेरिका के एडीसन, फ्रांस के ल्यूमिऐरे बंधुओं तथा ब्रिटेन के पॉल को जाता है।

भारत में 1899 में सिनेमा का प्रारंभ हरिश्चंद्र सरवाराय भाटवडेकर के 'दि रेसटर्स' तथा 'मैन एंड मंकी' जैसी छोटी फिल्मों से हुआ। मई 1913 में दादा साहब फाल्के की मूक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' प्रदर्शित की गई। पहली बोलती फिल्म 'आलमआरा' 14 मार्च 1931 को प्रदर्शित की गई। 1931 में ही तेलुगु में 'भक्त प्रहलाद' तथा तमिल में 'कालिदास' बोलती फिल्में बनीं। सिनेमा ने देश को मनोरंजन एवं सामाजिक वातावरण को समझने का सशक्त माध्यम प्रदान किया। फिल्मों में साहित्य, संगीत, फोटोग्राफी तथा कला का सम्मिश्रण जनसाधारण के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ। सामाजिक समस्याओं, पौराणिक गाथाओं तथा देशभक्ति से ओत-प्रोत दर्शकों के मन पर सिनेमा की गहरी छाप ने सिनेमा की शैक्षिक उपयोगिता को बढ़ाया।

रेडियो विद्युत चुम्बकीय तरंगों द्वारा बिना तार के संदेश भेजने की संचार तकनीक पर प्रयोग सन् 1870 में प्रो. मैक्सवेल ने किए। हेनरिच रूडोल्फ हर्ट्ज ने 1887 में रेडियो तरंगों के अस्तित्व को प्रमाणित किया और 1895 में मारकोनी ने इन्हीं रेडियो तरंगों द्वारा बिना तार के संकेत भेजने और प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। 1896 में जब लंदन रेडियो पेटेंट हुआ तभी से इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यमों के वर्तमान युग की शुरुआत हुई और 20 वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों से रेडियो युग शुरू हुआ।

भारत में 1920 से रेडियो प्रसारण हुए किंतु वे छिटपुट ही थे। 1923 में रेडियो क्लब बंबई ने कुछ प्रसारण किये, परंतु नियमित प्रसारण 1927 में बंबई और कलकत्ता से आरंभ हुए। बाद में 1936 में भारतीय प्रसारण को ऑल इंडिया रेडियो तथा 1957 से आकाशवाणी के नाम से जाना जाने लगा। आज भी देश के सभी केंद्र आकाशवाणी केंद्र ही कहलाते हैं। देश के विभाजन से पूर्व देश में कुल 9 रेडियो प्रसारण केंद्र थे, विभाजन के बाद देश में छह केंद्र रह गए। ये छह केंद्र दिल्ली, कोलकाता, बंबई (मुंबई), मद्रास (चेन्नई), लखनऊ तथा त्रिचुरापल्ली में स्थित थे। प्रसारण की प्रभाव-शक्ति के कारण देश में तीव्र गति से रेडियो का विकास हुआ। 2004 तक देश में कुल 215 आकाशवाणी केंद्रों से प्रसारण होने लगे। इनमें 77 स्थानीय केंद्र तथा 40 विविध भारती सेवा केंद्र हैं। इन प्रसारणों को श्रोताओं तक 144 मीडियम वेव, 55 शॉर्ट वेव तथा 139 एफ.एम. ट्रांसमिटरों द्वारा पहुँचाया जाता है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

रेडियो ने देश में हरित क्रांति, श्वेत क्रांति एवं नीली क्रांति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रेडियो की पहुँच देश की 99.13 प्रतिशत जनसंख्या तक है, जिस कारण देश के अशिक्षित वर्ग कमजोर वर्गों तथा दूरदराज के वासियों के लिए रेडियो मनोरंजन एवं सूचना तथा शिक्षा का सशक्त साधन है। वर्ष 2004 में शुरू की गई डी.टी.एच. (डाइरेक्ट टू होम) सेवा द्वारा रेडियो ने कई भाषाओं में प्रसारण कर पूरे देश में अपनी सार्थकता को पुन: स्थापित किया।

टेलीविजन 1923 में जेनकिन्स द्वारा टेलीविजन के माध्यम से चित्र भेजने के प्रयोग किए गए। स्कॉटिश वैज्ञानिक जॉन लॉगी बेयर्ड ने 1926 में टेलीविजन प्रणाली का जन प्रदर्शन किया। टेलीविजन को प्रायोगिक रूप 1931 में इसाक शिऑनवर्ग के निर्देशन में गठित दल द्वारा दिया गया।

भारत में दूरदर्शन के प्रसारण 15 सितंबर, 1959 में दिल्ली में आरंभ हुए। 1966 में बंबई में दूसरा प्रसारण केंद्र बना। 1975 में कलकत्ता, मद्रास, श्रीनगर, अमृतसर (जालंधर) तथा लखनऊ केंद्रों से प्रसारण शुरू हो गया और भारत में टेलीविजन प्रसारण महत्त्वपूर्ण जनसंचार माध्यम के रूप में उभरने लगा। 1982 में दिल्ली में आयोजित एशियाई खेलों के समय से रंगीन टेलीविजन की प्रसारण सुविधा की शुरुआत हुई। 1982 में विभिन्न केंद्रों से सैटेलाइट लिंक सेवा द्वारा राष्ट्रीय प्रसारण शुरू किए गए। दूरदर्शन ने 1986 से वाणिज्य प्रसारण भी शुरू किए। वर्तमान में 60 दूरदर्शन केंद्रों द्वारा 27 चैनलों के प्रसारण में डी.डी. नेशनल, डी.डी. स्पोर्ट्स, डी.डी. भारती, डी.डी. ज्ञानदर्शन आदि चैनल उपलब्ध हैं। दूरदर्शन द्वारा 18 क्षेत्रीय भाषाओं में सैटेलाइट चैनलों पर भी प्रसारण किए जाते हैं। दूरदर्शन की उपयोगिता एवं लोकप्रियता ने सिनेमा तथा रेडियो पर प्रभाव डाला।

नवीनतम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया रेडियो तथा टेलीविजन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कहलाते हैं। इक्कीसवीं सदी का आरंभ सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई क्रांति का युग है। कंप्यूटर तथा माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स ने इन्फॉरमेशन टेक्नोलॉजी (सूचना प्रौद्योगिकी) का सूत्रपात किया।

मोबाइल फोन, फैक्स, सी.डी. रोम और मल्टी मीडिया के तीव्र विकास ने सारी दुनिया को चौंका दिया और इसके उपभोक्ता तेजी से बढ़ने लगे। अच्छा भला शिक्षित व्यक्ति इन उपकरणों के उपयोग करने की कला से अनभिज्ञ होकर अनपढ़ मानने लगा। आज कंप्यूटर की उपयोगिता ने सही अर्थों में संसार को ग्लोबल विलेज (वैश्विक गाँव) बना दिया है। इंटरनेट सुविधा के कई रूप ई-प्रशासन, ई-कॉमर्स तथा ई-मेल विलक्षण उपयोगिता रखते हैं।

निष्कर्ष जनसंचार के विभिन्न माध्यम के उपयोग के साथ इनकी प्रणाली को नियंत्रित करने वाले की आवश्यकता भी होती है। जिनमें आलेख लिखने वाले भी आते हैं। रेडियो लेखन की दृष्टि से अन्य माध्यमों में और रेडियो लेखन में अंतर जानना जरूरी है। हिंदी-भाषा लेखकों के साथ अन्य भारतीय भाषाओं के लेखकों के लिए भी संचार माध्यमों में अपार संभावनाएँ हैं।

एक सफल रेडियो अथवा टी.वी. लेखक के लिए जनसंचार तथा दूरसंचार के क्षेत्र में घट रही घटनाओं एवं परिवर्तनों से अद्यतन रखना जरूरी है।

रेडियो भौतिकी तथा प्रौद्योगिकी

रेडियो लेखक के लिए रेडियो क्षेत्र से जुड़े श्रोताओं की जानकारी होना अत्यावश्यक है इसलिए रेडियो की भौतिकी तथा यांत्रिकी से संबंधित जानकारी प्राप्त करना भी जरूरी है।

आयनमंडल (Ionosphere) धरती से 50 से 175 किलोमीटर की परिधि की हवा में आयन तथा मुक्त इलेक्ट्रॉन की संख्या बढ़ती जाती है। वायु का यह आयनीकरण सूरज के प्रकाश के कारण होता है। इसी कारण रात में आयनमंडल 50 किलोमीटर की ऊँचाई से कुछ और ऊपर से शुरू होता है। इसका प्रभाव रेडियो प्रसारणों के आच्छादन क्षेत्र पर पड़ता है।

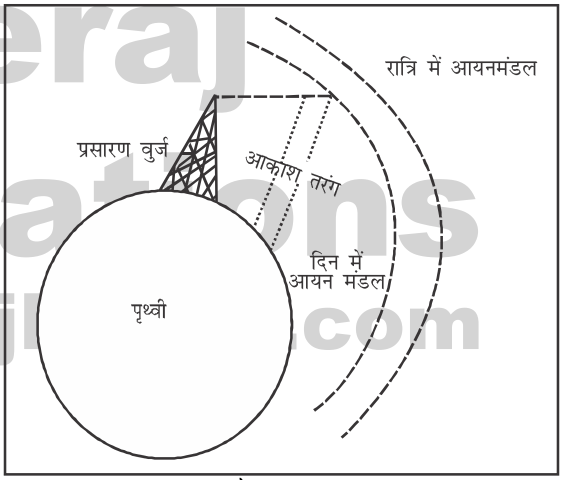

उपर्युक्त चित्र बताता है कि किसी प्रसारण बुर्ज से प्रसारित कार्यक्रम दिन की अपेक्षा रात में आयनमंडल के बृहत् क्षेत्र के कारण परावर्तित होकर पृथ्वी के ज्यादा बड़े भाग को आच्छादित करता है। आयनमंडल की सघनता रात्रि में बढ़ जाने के कारण आकाश तरंगें ज्यादा संख्या में परावर्तित होती हैं, जिससे रेडियो का अभिग्रहण दिन की तुलना में अच्छा हो जाता है।

रेडियो अभिग्राही (Radio Receiver) रेडियो स्टेशनों द्वारा प्रसारित विद्युत चुम्बकीय तरंगों को ग्रहण कर ध्वनि तरंगों में परिवर्तित करने वाला यंत्र रेडियो अभिग्राही कहलाता है, जिसे हम सुनते हैं। रेडियो अभिग्राही का ही संक्षिप्त रूप रेडियो है।

रेडियो की कार्य प्रणाली को निम्न रूपों में समझा जा सकता है

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(i) रेडियो एक एन्टेना या एरियल से जुड़ा होता है। एरियल अपने चारों ओर रेडियो आवृत्ति तरंगों को ग्रहण करता है।

(ii) रेडियो आवृत्ति तरंगें एरियल द्वारा समस्वरक (Tuner) अपने तक पहुँची तरंगों में से इच्छित आवृत्ति तरंग को ही ग्रहण करता है।

(iii) रेडियो में बनी विशेष प्रकार से बनी निर्वात नलियाँ कार्यक्रम तरंग को वाहक तरंग से अलग करती हैं।

(iv) कार्यक्रम तरंग बहुत कमजोर होती है और वह बिना सहायता के ध्वनि-विस्तारक यंत्र (Loud speaker) को चालित नहीं कर सकती। अत: उसे प्रवर्धक (Amplifier) (जो एक निर्वात नली होती है) की सहायता से वर्धित किया जाता है। अब निर्वात नलियों के स्थान पर ट्रांजिस्टरों का प्रयोग होने लगा है। निर्वात नलियों की अपेक्षा ट्रांजिस्टर कम स्थान लेते हैं। इन्हीं के चलते रेडियो के स्थान पर छोटे-छोटे ट्रांजिस्टरों का बनना संभव हो सका। ट्रांजिस्टर निर्वात नलियों की अपेक्षा कम ऊर्जा का भी उपयोग करते हैं।

(v) ध्वनि विस्तारक (Loud speaker) कार्यक्रम तरंगों को ध्वनि तरंगों में परिवर्तित करके हमें सुना देता है।

रेडियो प्रसारक रेडियो अभिग्राही, प्रसारकों द्वारा प्रसारित तरंगों को ही अभिगृहीत करते हैं। हमारे एरियल तक देश-विदेश के विविध प्रसारकों द्वारा प्रसारित विद्युत चुंबकीय तरंगें आती हैं।

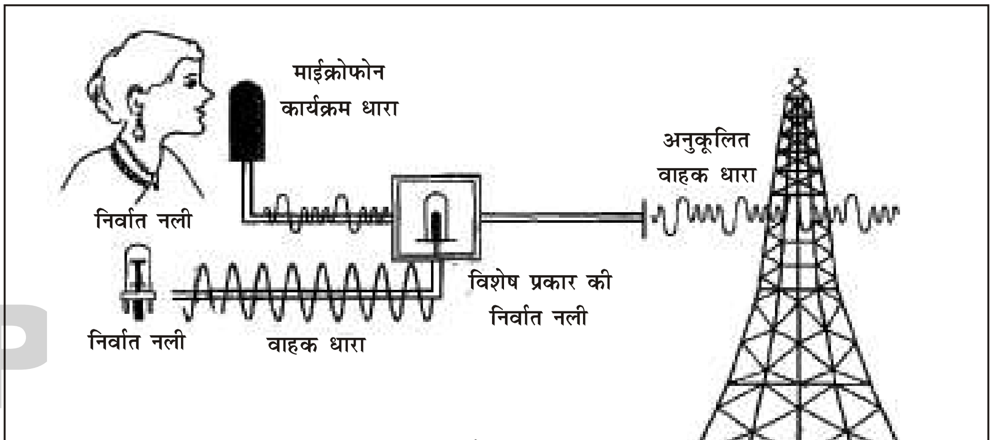

प्रसारण की कार्य प्रणाली

रेडियो प्रसारण की प्रक्रिया के प्रमुख बिंदु इस प्रकार हैं

(i) प्रसारणकर्त्ता रेडियो स्टेशन पर एक ध्वनिग्राहक (Microphone) के सामने बोलता है। माइक्रोफोन ध्वनि ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में परिर्वतन कर देता है। माइक्रोफोन के अंदर सूक्ष्म कार्बन के कण संपुटिकाओं (Capsules) में बंद होते हैं, जिनका संबंध एक तार से होता है जो कार्बन के कणों में उत्पादित विद्युत ऊर्जा को आगे बढ़ाता है, क्योंकि कार्बन दबाव पड़ने पर यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदल देता है। प्रसारणकर्त्ता प्लास्टिक अथवा धातु की लचीली पट्टी अथवा पटल के सम्मुख बोलता है। उसके बोलने से निकली ऊर्जा पटल और उसके पीछे स्थित कार्बन कणों को दबाकर तार के माध्यम से विद्युत ऊर्जा को आगे बढ़ाते हैं।

(ii) विद्युत ऊर्जा को कार्यक्रम धारा (Programme Current) कहते हैं, जो दूर तक नहीं भेजी जा सकती।

(iii) रेडियो स्टेशन पर स्थित निर्वात नलियाँ वाहक धारा (Carrier Current) का उत्पादन कर उन तरंगों को दूर तक पहुँचाती हैं।

(iv) विशेष प्रकार की निर्वात नलियों में कार्यक्रम धारा के द्वारा वाहक धारा का अनुकूलन (Meditation) किया जाता है।

(v) यह अनुकूलित वाहक धारा तारों द्वारा रेडियो प्रसारण बुर्ज तक पहुँचाकर प्रसारित कर दी जाती है।

तरंगों की गति तरंग किसी पदार्थ के सघन और विरल कणों से ऊर्जा के संचरण की श्रृंखला है। ताप, ध्वनि, प्रकाश आदि तरंगों की श्रृंखला द्वारा ही संचारित होते हैं। प्रकाश विद्युत चुंबकीय तरंग है और सारे विद्युत चुंबकीय तरंगों की चाल (speed) एक

www.neerajbooks.com